

इतिहास में ज्योतिष का महत्व

श्रीमती शशि प्रभा स्वामी

सेवानिवृत्त मुख्य पुरारसायनवेत्ता
पुरातत्व एवं संग्रहालय विभाग, जयपुर

भारतीय ज्योतिष

भारतीय ज्योतिष ग्रह-नक्षत्रों की गणना की वह पद्धति है जिसका भारत में विकास हुआ है। आजकल भी भारत में इसी पद्धति से पंचांग बनते हैं, जिनके आधार पर देश भर में धार्मिक त्यौहार तथा पर्व मनाए जाते हैं। वर्तमान काल में अधिकांश पंचांग सूर्य सिद्धांत, मकरंद सारणियों तथा ग्रहलाघव की विधि से प्रस्तुत किए जाते हैं। कुछ ऐसे भी पंचांग बनते हैं जिन्हें नॉटिकल अल्मनाक के आधार पर प्रस्तुत किए जाते हैं, किंतु इन्हें प्रायः भारतीय निरयन पद्धति के अनुकूल बना दिया जाता है।

प्राचीन भारत में ज्योतिष का अर्थ ग्रहों और नक्षत्रों की चाल का अध्ययन करने के लिए था, यानि ब्रह्माण्ड के बारे में अध्ययन। कालान्तर में फलित ज्योतिष के समावेश के चलते ज्योतिष शब्द के मायने बदल गए और अब इसे लोगों का भाग्य देखने वाली विद्या समझा जाता है।

भारत का प्राचीनतम उपलब्ध साहित्य वैदिक साहित्य है। वैदिक काल में भारतीय लोगों द्वारा यज्ञ किये जाते थे। यज्ञों से विशिष्ट फल प्राप्त करने के लिये उन्हें निर्धारित समय पर करना आवश्यक था इसलिए वैदिक काल से ही भारतीयों ने वेदों द्वारा सूर्य और चंद्रमा की स्थितियों से काल का ज्ञान प्राप्त करना शुरू कर दिया गया था। पंचांग सुधार समिति की रिपोर्ट में दिए गए विवरण के अनुसार ऋग्वेद काल के आर्यों ने चांद्र और वर्षगणना पद्धति का ज्ञान प्राप्त कर लिया था। वे 12 चांद्र मास तथा चंद्र मासों को सौर वर्ष से संबद्ध करने वाले अधिमास को भी जानते थे व दिन को चंद्रमा के नक्षत्र से व्यक्त करते थे। उन्हें चंद्रगतियों के ज्ञानोपयोगी चांद्र राशिचक्र का ज्ञान था। वर्ष के दिनों की संख्या 365 थी, जिनमें से चांद्र वर्ष के लिये 12 दिन घटा देते थे। रिपोर्ट के अनुसार ऋग्वेदकालीन आर्यों का समय कम से कम 1,200 वर्ष ईसा पूर्व अवश्य होना चाहिए। लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 'ओरायन' के अनुसार यह समय शक संवत् से लगभग 4000 वर्ष पहले को ठहरता है।

यजुर्वेद काल में भारतीयों ने मासों के 12 नाम मधु, माधव, शुक्र, शुचि, नमस्, नमस्य, इष, ऊर्जा, सहस्र, तपस् तथा तपस्य रखें थे। बाद में यही पूर्णिमा में चन्द्रमा के नक्षत्र के आधार पर चैत्र, वैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद, आश्विन, कार्तिक मार्गशीर्ष, पौष, माघ तथा फल्गुन हो गए, यजुर्वेद में नक्षत्रों की पूरी संख्या तथा उनके अधिष्ठाता देवताओं के नाम भी मिलते हैं। यजुर्वेद में तिथि तथा पक्षों, उत्तर तथा दक्षिण अयन और विषुवत दिवस की भी कल्पना है। विषुवत दिन वह है जिस दिन सूर्य विषुवत तथा क्रांतिवृत्त के संपात में रहता है। श्री शंकर बालकृष्ण दीक्षित के अनुसार यजुर्वेद कालिक आर्यों को गुरु, शुक्र तथा राहु-केतु का ज्ञान था। यजुर्वेद के रचनाकाल के विषय में विद्वानों में मतभेद है। यदि हम पाश्चात्य पक्षमाने तो, कीथ के मतानुसार तो यजुर्वेद की रचना 600 वर्ष ईसा पूर्व हो चुकी थी। इसके पश्चात् वेदांग ज्योतिष का काल आता है, जो ई.पू. 1400 वर्षों से लेकर ई.पू. 400 वर्ष तक है। वेदांग ज्योतिष के अनुसार पाँच वर्षों का युग माना गया है, जिसमें 1830 माध्य सावन दिन, 62 चंद्र मास, 1860 तिथियाँ तथा 67 नाक्षत्र मास होते हैं। युग के पाँच वर्षों के नाम हैं:- संवत्सर, पिरवत्सर, इदावत्सर, अनुवत्सर तथा इद्वत्सर इसके अनुसार तिथि तथा चांद्र नक्षत्र की गणना होती थी। इसके अनुसार मासों के माध्य सावन दिनों की गणना भी की गई है। वेदांग ज्योतिष के अनुसार वह युग की कल्पना, जिसमें सूर्य और चंद्रमा के प्रत्यक्ष वेधों के आधार पर मध्यम गति ज्ञात करके इष्ट तिथि आदि निकाली गई हैं, आगे आनेवाले सिद्धांत ज्योतिष के ग्रंथों में इसी प्रणाली को अपनाकर मध्यम ग्रह निकाले गए हैं।

वेदांग ज्योतिष और सिद्धान्त ज्योतिष काल के भीतर कोई ज्योतिष गणना का ग्रंथ उपलब्ध नहीं होता। किंतु इस बीच के साहित्य में ऐसे प्रमाण मिलते हैं जिनसे यह स्पष्ट है कि ज्योतिष के ज्ञान में वृद्धि अवश्य होती रही है, उदाहरण के लिये, महाभारत में कई स्थानों पर ग्रहों की स्थिति, ग्रहयुति, ग्रहयुद्ध आदि का वर्णन है इससे इतना स्पष्ट है कि महाभारत के समय में भारतवासी ग्रहों के वेध तथा उनकी स्थिति से परिचित थे।

गणित ज्योतिष के ग्रंथों के दो वर्गीकरण हैं: सिद्धान्त ग्रन्थ तथा करण ग्रंथ। सिद्धांतग्रंथ युगादि अथवा कल्पादि पद्धति से तथा करणग्रंथ किसी शक के आरंभ की गणनापद्धति से लिखे गए हैं। गणित ज्योतिष ग्रंथों के मुख्य प्रतिपाद्य विषय है। मध्यम ग्रहों की गणना, स्पष्ट ग्रहों की गणना, दिक, देश तथा काल, सूर्य और चंद्रगहण, ग्रहयुति, ग्रहच्छाया, सूर्य सानिध्य से ग्रहों का उदयास्त, चंद्रमा की शृंगोन्नति, पातविवेचन तथा वेधयंत्रों का विवेचन।

ग्रहों की कक्षाएँ

भारतीय ज्योतिष में ग्रहों की कक्षाएँ चंद्र, बुध, शुक्र, रवि, मंगल, गुरु, शनि के क्रम से उत्तरोत्तर पृथ्वी से दूर हैं। इनका केंद्र पृथ्वी को माना गया है। यद्यपि ग्रहों के साधन के लिये प्रत्येक कक्षा का अर्धव्यास त्रिज्यातुल्य कल्पित

किया है, तथापि उनकी अंत्यपल्लज्या भिन्न होने के कारण उनकी दूरी विभिन्न प्रकार की आती है। ग्रहकक्षा क्रांतिवृत्त के संपात को कहते हैं। ग्रह के भ्रमणमार्ग को विमंडल कहते हैं। क्रांतिवृत्त तथा विमंडल के बीच के कोण को परमविक्षेप कहते हैं। इनके मान भूकेन्द्रित ज्ञात किए गए हैं। तमोग्रह राहु एवं केतु सदा चंद्रमा के पातों पर कल्पित किए जाते हैं। पात की गति विलोम होती है।

ग्रहणाधिकारों में सूर्य तथा चंद्र के ग्रहणों का गणित है। चंद्रमा का ग्रहण भूछाया में प्रविष्ट होने से तथा सूर्यग्रहण चंद्रमा द्वारा सूर्य के ढके जाने से माना गया है। सूर्यग्रहण में लंबन के कारण भूकेन्द्रीय चंद्र तथा हमें दिखाई देने वाले चंद्र में बहुत अंतर आ जाता है। अतः इसके लिये लंबन का ज्ञान किया जाता है।

चंद्रशृंगोन्नति में चंद्रमा की कलाओं को ज्ञात किया जाता है। ग्रहच्छयाधिकार में ग्रहों के उदयास्त काल तथा इष्टकाल में वेध की विधि और पाताधिकार में सूर्य और चंद्रमा के क्रांतिसाम्य का विचार किया जाता है। भिन्न अयन तथा एक गोलार्ध में होने पर, सायन रवि चन्द्र के योग 180व के समय क्रांतिसाम्य होने पर, व्यतिपात तथा एक अयन भिन्न गोलार्ध में होने पर वही योग 360व के तुल्य हो, तो क्रांतिसाम्य में वैधृति होती है। ये दोनों शुभ कार्यों के लिये वर्जित हैं। ग्रहयुति में ग्रहों के अति सान्निध्य की स्थितियों का (युद्ध समागम का) का गणित है। भग्रहयुति में नक्षत्रों के नियामक दिए गए हैं।

भारतीय ज्योतिष प्रणाली से बनाए तिथिपत्र को पंचांग कहते हैं। पंचांग के पाँच अंग हैं: तिथि, वार, नक्षत्र, योग तथा करण। पंचांग में इनके अतिरिक्त दैनिक, दैनिक लग्नस्पष्ट, ग्रहचार, ग्रहों के सूर्यसान्निध्य से उदय और अस्त और चंद्रोदयास्त दिए रहते हैं। इनके अतिरिक्त इनमें विविध मुहूर्त तथा धार्मिक पर्व दिए रहते हैं।

जयपुर शहर के अधिष्ठाता महाराजा सवाई जयसिंह (1699-1743) द्वारा आकाश में स्थित ग्रहों, नक्षत्रों एवं अन्य आकाशीय पिण्डों के अध्ययन हेतु दिल्ली (1724), जयपुर (1728-35), उज्जैन (1734) बनारस (1737) एवं मथुरा (1738) में पाँच खगोलीय वेधशालाओं का निर्माण करवाया गया, जिनमें संबंधित शहरों के अक्षांश के आधार पर खगोलीय यंत्र निर्मित करवाये गये।

महाराजा सवाई जयसिंह एक कुशल शासक होने के साथ-साथ विद्वान गणितज्ञ, खगोल शास्त्री, नगर नियोजक तथा कला, वास्तुकला एवं साहित्य के संरक्षक भी थे। वह भारतीय एवं ग्रीक गणित के अच्छे ज्ञाता थे।

17 वीं शताब्दी के प्रारम्भिक काल में भारत में खगोल शास्त्र के हिन्दू एवं इस्लामिक नामक दो सिद्धांत प्रतिपादित थे। तत्कालीन समय में मुगल बादशाह मुहम्मद शाह ने खगोलीय गणनाओं में संशोधन कर नयी सारणी बनाने हेतु विशेष रूप से महाराजा सवाई जयसिंह को नियुक्त किया तथा महाराजा सवाई जयसिंह ने भारतीय खगोल

शास्त्र को नया रूप देने के क्रम में 7 वर्ष के अथक प्रयासों के पश्चात् वर्ष 1723 में खगोलीय गणनाएं कर नई सारणी तैयार की, जिन्हें जिल-ए-मुहम्मद शाही के नाम से जाना जाता है। इस कार्य हेतु प्रारम्भ में उनके द्वारा इस्लामिक सिद्धांत के आधार पर धातु, लकड़ी, पत्थर एवं मिट्टी के मॉडल्स बनाये गये, जो जयपुर के जंतर मंतर स्थित व्याख्या केन्द्र में वैज्ञानिक पद्धति से प्रदर्शित है। इन्हीं यंत्रों में आवश्यक संशोधन कर उनके द्वारा पाँचों वेधशालाओं में चूने एवं पत्थरों से विशाल यंत्रों का निर्माण करवाया गया।

वर्तमान में ज्योतिष से फ्लादेश देने में दो सिद्धांत प्रचलित है, सायन पद्धति एवं निरयन पद्धति। पाश्चात्य ज्योतिषि सभी ग्रहों की सायन राशि व भावों के आधार पर जन्म कुण्डली का निर्माण करते हैं, जबकि भारतीय ज्योतिषि निरयन पद्धति के आधार पर जन्म कुण्डली का निर्माण करते हैं।

इन पाँचों वेधशालाओं में से, जिन्हें जंतर-मंतर के नाम से जाना जाता है, जयपुर स्थित वेधशाला सबसे बड़ी, सबसे अधिक सटीक गणना देने वाली तथा पूर्णतया सुरक्षित एवं संरक्षित है। महाराजा द्वारा यहाँ पर राशि वलय यंत्र भी निर्मित करवाये गये, जो और किसी वेधशाला में नहीं हैं। यह कार्य उन्होंने पण्डित जगन्नाथ सम्राट एवं जयपुर शहर के वास्तुकार पण्डित विद्याधर चक्रवर्ती की सहायता से सम्पन्न करवाया। जयपुर शहर की संरचना भी वास्तु के आधार पर की गई। इस कार्य हेतु विश्व में पहली बार नगर का नक्शा बनाया गया।

यह सभी यंत्र खगोलीय गोले के साथ 270 उश्रर का कोण बनाते हैं, जो पृथ्वी पर जयपुर के अक्षांश के समान है। इनकी सहायता से हम जयपुर का स्थानीय समय, खगोलीय पिण्डों की दिशा, ध्रुव तारा, सप्तर्षि मण्डल, ग्रहों, नक्षत्रों, सूर्य, चन्द्रमा एवं अन्य आकाशीय पिण्डों की किसी विशिष्ट समय में स्पष्ट स्थिति, गति, क्रांति, दिगंश, उन्नतांश, नतांश, सायन राशि, निरयन, सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण, सूर्योदय एवं सूर्यास्त काल, दिनमान एवं रात्रिमान, अक्षांश, राशि, लग्न, रेखांश आदि ज्ञात कर सकते हैं। इनमें से अधिकांश यंत्रों से रात्रि में भी वेध किये जा सकते हैं।

वर्ष में दो बार विषुवत सम्पात दिवस आते हैं, जिनमें 21 मार्च (वासंतिक सम्पात) तथा 23 सितम्बर (शारदीय सम्पात) को सूर्य भूमध्य रेखा पर रहता है, जिसके फलस्वरूप उन दो दिनों में दिन और रात्रि की अवधि बराबर होती है। 22 मार्च से 22 सितम्बर तक सूर्य उश्ररी गोलाद्ध में तथा 24 सितम्बर से 20 मार्च तक दक्षिणी गोलाद्ध में रहता है। सूर्य की यह क्रांति जयपुर वेधशाला के यंत्रों - नाड़ी वलय यंत्र, पलभा यंत्र, जयप्रकाश यंत्र, क्रांतिवृत्त यंत्र एवं षष्ठांश यंत्र से स्पष्ट देखी जा सकती है। षष्ठांश यंत्र जयपुर के स्थानीय समय में दिन के 12 बजे सूर्य की स्थिति को दर्शाता है। इससे सूर्य के विषुवत् रेखा, उश्ररी गोलाद्ध अथवा दक्षिणी गोलाद्ध में रहने की जानकारी के साथ-साथ पृथ्वी से उनकी दूरी/कोण का भी पता लगाया जा सकता है।

इसी प्रकार उश्ररी गोलाद्ध मे 21 जून सबसे बड़ा दिन एवं 22/23 दिसम्बर सबसे छोटा दिन होता है। चूँकि पृथ्वी अपनी अक्ष पर 23 1/20 झुकी हुई है, इस कारण 21 जून को पृथ्वी सूर्य के सबसे नजदीक एवं 22/23 दिसम्बर को सबसे दूर रहती है। इसी कारण 22 मार्च से 22 सितम्बर तक उश्ररी गोलाद्ध मे ग्रीष्मकालीन अयनांश तथा 24 सितम्बर से 20 मार्च तक शीतकालीन अयनांश की स्थिति रहती है।

21 जून को सूर्य की किरणे कर्क रेखा पर सीधी पड़ती है तथा 22-23 दिसम्बर को मकर रेखा पर पड़ती है। यह स्थितियाँ वेधशाला में स्थित नाडीवलय यंत्र, पलभा यंत्र, जयप्रकाश यंत्र, सम्राट यंत्र, क्रांतिवृत्त यंत्र एवं षष्ठांश यंत्र से स्पष्ट देखी जा सकती है। इन वैधशालाओं द्वारा उस स्थान का सटीक समय ज्ञात होता है। परन्तु समय को प्ज् में परिवर्तन करने हेतु निम्न समयान्तराल जोड़ना अथवा घटाना होता है। इन्ही वेधशालाओं के क्रम में प्रत्येक देश में प्रयोगशालाएँ जैसे - अमेरिका में नासा एवं भारत में इसरो का निर्माण हुआ। इसी प्रकार भारत में बिड़ला प्लेनेटोरियम का निर्माण किया गया है, जिनमें खगोल से संबंधित शोध किये जाते हैं।

भारतीय मानक (आई.एस.टी.) एवं जयपुर के सामान्य समय के बीच समयान्तराल

दिनांक	01 से 05	06 से 10	11 से 15	16 से 20	21 से 25	26 से 30
जनवरी	32.10	34.18	36.13	37.50	39.09	40.08
फरवरी	40.52	41.06	40.38	39.58	39.58	39.28
मार्च	38.06	37.15	35.52	34.15	32.55	31.45
अप्रैल	29.37	27.14.	26.56	25.48	24.48	24.20
मई	23.28	23.44	23.05	23.15	23.37	24.21
जून	25.30	25.40	26.48	28.12	29.19	30.18
जुलाई	31.15	32.05	32.40	33.50	33.15	35.15
अगस्त	32.46	32.30	31.17	30.12	28.55	27.10
सितम्बर	25.34	23.25	22.50	20.18	18.34	16.48
अक्टूबर	15.18	13.54	12.39	11.38	10.56	10.38
नवम्बर	10.25	10.43	11.22	12.24	13.50	15.24
दिसम्बर	17.26	19.18	21.48	24.38	26.48	29.41

ज्योतिष शास्त्र का प्रथम परिचय ऋग्वेद से मिलता है। उग्रर प्राचीन काल में भारत में ज्योतिष अपने चरम तक फूली-फूली एवं पल्लवित हुई, परन्तु कालांतर में भारत में यह विद्या लगभग विलोपित हो गई। ज्योतिष का पुनः उदय यूनान मध्य एशिया तथा इस्लामिक देशों के माध्यम से यूरोप में पहुँचा तथा वहीं से भारत में इस विद्या का पुनारोगमन हुआ। मुगल शासकों ने भी इसमें पर्याप्त योगदान दिया था। मुगल बादशाह जहाँगीर ने 1618 ई.पू. में राशियों वाले सोने चांदी के सिक्के ढलवाये, जिनमें से 15 सिक्के आज भी राजस्थान प्रदेश के विभिन्न संग्रहालयों यथा- जोधपुर, कोटा, बीकानेर, उदयपुर आदि में प्रदर्शित हैं। राजकीय केन्द्रीय संग्रहालय में मेष, कर्क, सिंह राशि के सिक्के प्रदर्शित हैं। इनके अतिरिक्त ब्रिटिश म्यूजियम लंदन में भी राशियों के सिक्के प्रदर्शित हैं।

इसी प्रकार प्राचीन मंदिरों में मूर्तिकला में नवग्रहों के अंकन का प्रचलन था। इसके साक्ष्य के रूप में नवग्रह पैनल राजस्थान के अनेकों संग्रहालयों एवं प्राचीन मंदिरों में मिलते हैं।

भारतीय ज्योतिष के अनुसार पृथ्वी सभी ग्रहों के मध्य में स्थित है तथा सभी नौ ग्रहों यथा - सूर्य, चन्द्रमा, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु एव केतु पृथ्वी के चारों ओर एक परिभ्रमण पथ पर चक्कर लगाते हैं। परन्तु वास्तव में सूर्य सभी ग्रहों के मध्य में स्थित है तथा शुक्र, बुध, पृथ्वी, मंगल, बृहस्पति, यूरेनस, नेपच्यून सूर्य के चारों ओर चक्कर लगाते हैं। पृथ्वी 365 दिन (01 वर्ष) में सूर्य का 01 चक्कर पूर्ण करती है, जिसके फलस्वरूप ऋतुएँ बनती हैं। इसी प्रकार चन्द्रमा, जो कि पृथ्वी का उपग्रह है, वह लगभग 28 दिन (01 माह) में पृथ्वी का चक्कर (परिभ्रमण) पूरा करता है जिससे भारतीय माह बनता है। भारतीय कैलेण्डर मे 12 माह हैं:- चैत्र, बैशाख, ज्येष्ठ, आषाढ़, सावन, भाद्रपद, अश्विन, कार्तिक, माघशीर्ष, पौष, माघ, फल्गुन। राहु तथा केतु अदृश्य पिण्ड ग्रह हैं।

राशियाँ एवं नक्षत्र - कुल बारह (12) राशियाँ हैं, यथा- मेष, वृष, मिथुन, कर्क, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ और मीन। सूर्य के चारों तरफग्रहों के परिभ्रमण पथ (म्बसपचजपब) 3600 का होता है। इस क्षेत्र को 12 भागों (राशियों) में विभाजित किया गया है। प्रत्येक राशि का मान 300 है। सूर्य के चारों ओर परिभ्रमण करते समय पृथ्वी के मार्ग में जो तारों का समूह आता है उनकी आकृति के आधार पर इन 12 राशियों का नामकरण किया गया है। इसी प्रकार चन्द्रमा के परिभ्रमण पथ को 27 नक्षत्रों में विभाजित किया गया है तथा प्रत्येक नक्षत्र का मान 7.500 है। तारों के समूह की आकृति के आधार पर नक्षत्रों का नामकरण किया गया है। राशियों के मान एवं माह से संबंधित तालिका निम्नानुसार है।

राशियों का समय एवं डिग्री

क्र.सं.	राशि का नाम	समय	डिग्री	
1	मेष Aries	21 मार्च से 19 अप्रैल - चैत्र	0.30°	
2	वृष	20 अप्रैल से 20 मई - वैशाख	31.60°	
3	मिथुन	21 मई से 20 जून - ज्येष्ठ	61.90°	
4	कर्क	21 जून से 22 जुलाई - आषाढ़	91.120°	
5	सिंह	23 जुलाई से 22 अगस्त - श्रावण	121.150°	
6	कन्या	23 अगस्त से 22 सितम्बर - भाद्रपद	151.180°	
7	तुला	23 सितम्बर से 22 अक्टूबर - आश्विन	181.210°	
8	वृश्चिक	23 अक्टूबर से 21 नवम्बर - कार्तिक	211.240°	
9	धनु	22 नवम्बर से 21 दिसम्बर - माघशीर्ष	241.270°	
10	मकर	22 दिसम्बर से 19 जनवरी - पौष	271.300°	
11	कुम्भ	20 जनवरी से 18 फरवरी - माघ	301.330°	
12	मीन	19 जनवरी से 20 फरवरी - फल्गुन	331.360°	

इसी प्रकार 27 नक्षत्रों के नाम, उनके नक्षत्रपति एवं उप नक्षत्र पति निम्नानुसार है -

क्र.सं.	नक्षत्र का नाम	नक्षत्रपति	उपनक्षत्रपति
1.	अश्विनि	केतु	अश्विनि कुमार
2.	भरणी	शुक्र	यम
3.	कृश्रिका	सूर्य	अग्नि
4.	रोहिणी	चन्द्रमा	ब्रह्मा
5.	मृगशिरा	मंगल	चन्द्रमा
6.	आर्द्रा	राहु	रूद्र (शिव)
7.	पुनर्वसु	गुरू (बृहस्पति)	अदिति
8.	पुष्य	शनि	गुरू (बृहस्पति)
9.	आश्लेषा	बुध	सर्प
10.	मघा	केतु	पितृ
11.	पूर्व फल्गुनी	शुक्र	भग
12.	उश्रर फल्गुनी	सूर्य	आर्यमान (अचर्मा)
13.	हस्त	चन्द्रमा	सूर्य
14.	चित्रा	मंगल	विश्वकर्मा
15.	स्वाति	राहु	वायु
16.	विशाखा	गुरू (बृहस्पति)	इन्द्र
17.	अनुराधा	शनि	मित्र
18.	ज्येष्ठा	बुध	इन्द्र
19.	मूल	केतु	निरिति (नैर्ऋति)
20.	पूर्वाषाढा	शुक्र	जल
21.	उश्रराषढा	सूर्य	विश्वदेव
22.	श्रावण	चन्द्रमा	विष्णु
23.	धनिष्ठा	मंगल	8 वसु
24.	शतभिषा	राहु	वरूण
25.	पूर्व भाद्रपदा	गुरू (बृहस्पति)	अजैकपाद
26.	उश्रर भाद्रपदा	शनि	अहिर बुध्याना (ड्रेगन)
27.	रेवती	बुध	पुषान्